श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

वेणु गीत- (अर्थ)

श्रीमद्भागवत महापुराण – वेणु गीत

श्री शुकदेव जी महाराज ने सुंदर ग्रीष्म ऋतु का वर्णन किया इसके बाद वर्षा ऋतु का वर्णन किया और फिर वर्षा ऋतु की दिव्यता का अति सुंदर वर्णन किया। वर्षा ऋतु के बाद शरद ऋतु का वर्णन शुकदेव जी महाराज ने किया है और गोपियों ने सुंदर वेणु गीत गाया। जिसके केवल यही भाव हैं कि अगर संसार में कोई देखने योग्य है तो केवल भगवान श्री कृष्ण हैं गोपिया एक पल के लिए भी परमात्मा श्री कृष्ण से दूर नहीं होना चाहती अपनी पलकों तक को झपकने नहीं देना चाहती | गोपियां कह रही है कि भगवान के अवतार लेने से चेतन और जड़ सभी उनके रूप रस का माधुर्य पान कर रहे हैं | यह वेणु गौएँ ,नदिया , ग्वाल-बाल , गिरिराज जी सभी बड़भागी हैं जिन्हें भगवान का सानिध्य प्राप्त हो रहा है |

श्रीशुक उवाच

इत्थं(म्) शरत्स्वच्छजलं(म्), पद्माकरसुगन्धिना ।

न्यविशद् वायुना वातं(म्), सगोगोपालकोऽच्युतः ॥ 1॥

श्री शुकदेव जी कहते हैं- परीक्षित ! शरद ऋतु के कारण वह वन प्रदेश बहुत सुंदर हो रहा था। जलाशयों में स्वच्छ निर्मल जल में खिले हुए कमलों की सुगंध से युक्त मंद वायु बह रही थी| ऐसे समय पर श्री कृष्ण ने गौओं और ग्वाल बालों के साथ उस वन में प्रवेश किया।

कुसुमितवनराजिशुष्मिभृं(ङ्)ग-

द्विजकुलघुष्टसरः(स्)सरिन्महीध्रम् ।

मधुपतिरवगाह्य चारयन् गाः(स्),

सहपशुपालबलश्चुकूज वेणुम् ॥ 2॥

सुंदर पुष्पों से लदे वृक्षों पर मतवाले भौंरे गुंजन कर रहे थे। मधुपति श्री कृष्ण ने बलराम जी और ग्वाल बालों के

साथ गौएँ चराते हुए अपनी बांसुरी पर मधुर तान छेड़ी |

तद् व्रजस्त्रिय आश्रुत्य, वेणुगीतं(म्) स्मरोदयम् ।

काश्चित् परोक्षं(ङ्) कृष्णस्य, स्वसखीभ्योऽन्ववर्णयन् ॥ 3॥

श्री कृष्ण की बंशी की ध्वनि को सुनकर गोपियों का हृदय प्रेम से भर गया तथा वह एकांत में अपनी सखियों से उनके रूप, गुण और बंशी की ध्वनि के प्रभाव का वर्णन करने लगी।

तद् वर्णयितुमारब्धाः(स्), स्मरन्त्यः(ख्) कृष्णचेष्टितम् ।

नाशकन् स्मरवेगेन, विक्षिप्तमनसो नृप ॥ 4॥

हे राजन! ब्रज की गोपियों ने बंशी की ध्वनि के माधुर्य का आपस में वर्णन करना चाहा परंतु श्री कृष्ण की मधुर चेष्टाओं, प्रेमपूर्ण चितवन ,मधुर मुस्कान ,भौहों के इशारे इत्यादि का स्मरण हो आया। उनकी भगवान से मिलने की आकांक्षा और भी बढ़ गई तथा वे उस वर्णन में असमर्थ हो गई।

बर्हापीडं(न्) नटवरवपुः(ख्) कर्णयोः(ख्) कर्णिकारं(म्),

बिभ्रद् वासः(ख्) कनककपिशं(म्) वैजयन्तीं(ञ्) च मालाम् ।

रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दैर्-

वृन्दारण्यं(म्) स्वपदरमणं(म्) प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥ 5॥

वे गोपियाँ मन ही मन देखने लगी कि श्री कृष्ण ग्वाल-बालों के साथ वृंदावन में प्रवेश कर रहे हैं।उनके सिर पर मयूर पिच्छ है, कानों पर पीले कनेर के फूल, शरीर पर सुनहरा पीतांबर और गले में पाच प्रकार के पुष्पों से बनी वैजयंती माला है। श्रेष्ठ नट जैसा सुंदर वेश धारण किए बासुरी के छिद्रों को वह अपने अधरामृत से भर रहे हैं ।उनके पीछे-पीछे ग्वाल बाल उनकी कीर्ति का गान कर रहे हैं। इस प्रकार वैकुंठ से भी श्रेष्ठ वह वृंदावन उनके चरण चिन्हों से और भी रमणीय बन गया है।

इति वेणुरवं(म्) राजन्, सर्वभूतमनोहरम् ।

श्रुत्वा व्रजस्त्रियः(स्) सर्वा, वर्णयन्त्योऽभिरेभिरे ॥ 6॥

हे राजन! जड़ चेतन समस्त भूतों का मन हरने वाली बंशी की ध्वनि को सुनकर गोपियाँ उसका वर्णन करते करते इतनी तन्मय हो गई कि एक दूसरे को आलिंगन देने लगी।

गोप्य ऊचुः

अक्षण्वतां(म्) फलमिदं(न्) न परं(म्) विदामः(स्),

सख्यः(फ्) पशूननु विवेशयतोर्वयस्यैः ।

वक्त्रं(म्) व्रजेशसुतयोरनुवेणु जुष्टं(म्),

यैर्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ॥ 7॥

गोपियां आपस में कहने लगी- अरी सखी!हमने तो आं खों की इतनी ही सफलता समझी है कि श्याम सुंदर श्री कृष्ण और गौरसुंदर बलराम अपने सखाओं के साथ गायों को हाँकर वन में ले जा रहे हो या सायंकाल उन्हें लौटा कर ला रहे हों, उन्होंने अपने अधरों पर मुरली धरी हो और प्रेम भरी तिरछी चितवन से वे हमारी ओर देख रहे हों, हम उस रूप माधुरी का पान करती रहें।

चूतप्रवालबर्हस्तबकोत्पलाब्ज-

मालानुपृक्तपरिधानविचित्रवेषौ ।

मध्ये विरेजतुरलं(म्) पशुपालगोष्ठ्यां(म्),

रं(ङ्)गे यथा नटवरौ क्व च गायमानौ ॥ 8॥

अरी सखी! जब वे आम की नई कोपलों, मोरों के पंख, फूलों के गुच्छे और कुमुद की मालाएँ तथा पीतांबर धारण कर लेते हैं तो उनका वेश बड़ा ही विचित्र बन जाता है| वे ग्वाल बालों के मध्य में विराजित होकर मुरली की तान छेड़ देते हैं तब ऐसा लगता है मानो चतुर नट रंगमंच पर अभिनय कर रहा हो उस समय की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

गोप्यः(ख्) किमाचरदयं(ङ्) कुशलं(म्) स्म वेणुर्-

दामोदराधरसुधामपि गोपिकानाम् ।

भुङ्क्ते स्वयं(म्) यदवशिष्टरसं(म्) ह्रदिन्यो,

हृष्यत्त्वचोऽश्रुमुमुचुस्तरवो यथाऽऽर्याः ॥ 9॥

अरी सखियों! श्री कृष्ण के अधरामृत का पान करने के लिए इस बासुरी ने कौन से शुभ कार्य किए होंगे। यह तो अधर सुधा रस का इस प्रकार पान किए जा रही है कि हमारे लिए तो थोड़ा सा भी रस शेष नहीं रहेगा। अपने वंश में भगवत् प्रेमी संतान को देखकर बासुरी के पूर्वज बाँस खुशी से अश्रु बहा रहे हैं, हर्षित हो रहे हैं।

वृन्दावनं(म्) सखि भुवो वितनोति कीर्तिं(म्),

यद् देवकीसुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि ।

गोविन्दवेणुमनु मत्तमयूरनृत्यं(म्),

प्रेक्ष्याद्रिसान्वपरतान्यसमस्तसत्त्वम् ॥ 10॥

अरी सखी! यह वृंदावन श्री कृष्ण के चरण कमलों के चिन्हों से चिन्हित होकर वैकुंठ लोक तक पृथ्वी की कीर्ति का विस्तार कर रहा है। जब देवकीनंदन श्री कृष्ण अपनी मुनिजन मोहिनी मुरली बजाते हैं तब मोर मतवाले होकर नाचने लगते हैं ,यह देख कर पर्वत पर विचरण करने वाले पशु-पक्षी भी चुपचाप शांत खड़े होकर देखने लगते हैं |

धन्याः(स्) स्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता,

या नन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेषम् ।

आकर्ण्य वेणुरणितं(म्) सहकृष्णसाराः(फ्),

पूजां(न्) दधुर्विरचितां(म्) प्रणयावलोकैः ॥ 11॥

अरी सखी! जब प्राण वल्लभ श्री कृष्णा विचित्र वेश धारण करके बांसुरी बजाते हैं तब यह मूढ़ बुद्धि वाली हरिणिया भी बंसी की तान सुनकर अपने पति कृष्ण सार मृगों के साथ नंदनंदन के पास चली आती हैं और अपनी प्रेम भरी बड़ी बड़ी आंखों से उन्हें निरखती हैं। श्री कृष्ण की प्रेम भरी चितवन से अपना सत्कार स्वीकार करती हैं। वास्तव में उनका जीवन धन्य है। हम वृंदावन की गोपियाँ होने पर भी इस प्रकार अपने आप को श्री कृष्ण पर निछावर नहीं कर पाती।

कृष्णं(न्) निरीक्ष्य वनितोत्सवरूपशीलं(म्),

श्रुत्वा च तत्क्वणितवेणुविचित्रगीतम् ।

देव्यो विमानगतयः(स्) स्मरनुन्नसारा,

भ्रश्यत्प्रसूनकबरा मुमुहुर्विनीव्यः ॥ 12॥

स्वर्ग की देविया जब सौंदर्य और शील के खजाने श्री कृष्ण को देखती हैं तब वंशी के आलाप सुनकर अपने विमानों पर ही सुध बुध खो बैठती हैं। उनके हृदय में कृष्ण से मिलने की तीव्र आकांक्षा जाग उठती है। वेअपना धीरज खो बैठती हैं और बेहोश हो जाती हैं, उन्हें पता ही नहीं चलता कि उनकी चोटियों में गु थे हुए फूल पृथ्वी पर गिर रहे हैं और उन्हें अपने वस्त्रों का भी भान नहीं रहता।

गावश्च कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीत-

पीयूषमुत्तभितकर्णपुटैः(फ्) पिबन्त्यः ।

शावाः(स्) स्नुतस्तनपयः(ख्)कवलाः(स्) स्म तस्थुर्-

गोविन्दमात्मनि दृशाश्रुकलाः(स्) स्पृशन्त्यः ॥ 13॥

अरी सखी! तुम देवियों की क्या बात कह रही हो इन गायों को देखो। जब हमारे प्यारे कृष्ण बांसुरी में स्वर भरते हैं तो गाय अपने दोनों कान इस प्रकार खड़े कर लेती है जैसे दोने बनाकर मानो उनसे अमृत पी रही हों। नेत्रों के द्वार से श्याम सुंदर को अपने हृदय में विराजमान कर देती हैं, उनके नेत्रों से आनंद के अश्रु छलक ने लगते हैं। बछड़ों की तो दशा ही निराली है| गायों के थनों से झरते दूध को पीते- पीते अचानक ही जब वे बंशी की ध्वनि सुनते हैं तब मुह में लिया हुआ दूध का घूंट ना तो उगल पाते हैं और ना ही निगल पाते हैं, ज्यों के त्यों ठिठके से खड़े रह जाते हैं।

प्रायो बताम्ब विहगा मुनयो वनेऽस्मिन्,

कृष्णेक्षितं(न्) तदुदितं(ङ्) कलवेणुगीतम् ।

आरुह्य ये द्रुमभुजान् रुचिरप्रवालान्,

शृण्वन्त्यमीलितदृशो विगतान्यवाचः ॥ 14॥

अरी सखी! वृंदावन के पक्षियों को देखो |ये सुंदर वृक्षों की नई कोंपलों वाली डालियों पर चुपचाप बैठ जाते हैं, आंखें भी बंद नहीं करते निर्निमेष नेत्रों से श्री कृष्ण की रूप माधुरी को देखकर निहाल होते हैं। अन्य सब शब्दों को छोड़कर केवल उन्हीं की मोहिनी वाणी और वंशी का त्रिभुवन मोहन संगीत सुनते हैं| हे सखी! उनका जीवन कितना धन्य है|

नद्यस्तदा तदुपधार्य मुकुन्दगीत-

मावर्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः ।

आलिं(ङ्)गनस्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारेर्-

गृह्णन्ति पादयुगलं(ङ्) कमलोपहाराः ॥ 15॥

अरी सखी! इन जड़ नदियों की ओर देखो, इनमें जो भंवर दिख रहे हैं उससे इनकी श्याम सुंदर से मिलने की तीव्र आकांक्षा का पता चलता है। इनके प्रवाह का वेग ही रुक गया है| लगता है इन्होंने भी वंशी की ध्वनि सुन ली है। देखो! तरंग रुपी हाथों से कमल के फूलों का उपहार श्याम सुंदर के चरणों में अर्पित करके मानो उनका आलिंगन कर रही हैं।

दृष्ट्वाऽऽतपे व्रजपशून् सह रामगोपैः(स्),

सं(ञ्)चारयन्तमनु वेणुमुदीरयन्तम् ।

प्रेमप्रवृद्ध उदितः(ख्) कुसुमावलीभिः(स्),

सख्युर्व्यधात् स्ववपुषाम्बुद आतपत्रम् ॥ 16॥

अरी सखी! तनिक इन बादलों की ओर भी तो देखो| जब यह देखते हैं कि बृजराज ग्वाल बालों के साथ धूप में गौएँ चरा रहे हैं और साथ-साथ बांसुरी भी बजाते जा रहे हैं,तब उनके हृदय में प्रेम उमड़ आता है और वे श्यामघन अपने सखा घनश्याम के ऊपर अपने शरीर को ही छाता बनाकर तान देते हैं| इतना ही नहीं जब वे नन्ही नन्ही बूंदों की वर्षा करते हैं तब ऐसा जान पड़ता है कि वे उनके ऊपर सुंदर सुंदर श्वेत पुष्प चढ़ा रहे हों।

पूर्णाः(फ्) पुलिन्द्य उरुगायपदाब्जराग-

श्रीकुं(ङ्)कुमेन दयितास्तनमण्डितेन ।

तद्दर्शनस्मररुजस्तृणरूषितेन,

लिम्पन्त्य आननकुचेषु जहुस्तदाधिम् ॥ 17॥

हे सखी! ये वृंदावन की भीलनिया धन्य हैं, इनके हृदय में श्री कृष्ण के प्रति बहुत प्रेम है। श्याम सुंदर के चरण कमलों पर जो केशर लगी होती है वही केशर हम गोपिया अपने वक्ष स्थलों पर लगाती हैं| श्याम सुंदर जब वृंदावन के घास पात पर चलते हैं तब वह केशर उनमें भी लग जाती है यह भीलनिया उन तिनकों पर से केशर उठाकर अपने वक्षस्थल और मुखों पर मल लेती हैं| इस प्रकार वे अपनी हृदय की पीड़ा को शांत करती हैं।

हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो,

यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ।

मानं(न्) तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत्,

पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥ 18॥

अरी सखी! यह गिरिराज गोवर्धन तो भगवान के भक्तों में बहुत ही श्रेष्ठ है। धन्य है इसके भाग्य। हमारे प्राण वल्लभ श्री कृष्ण और बलराम के चरण कमलों का स्पर्श पाकर यह कितना आनंदित रहता है। यह तो ग्वाल बालों गायों एवं उन दोनों भाइयों का बड़ा ही सत्कार करता है। पीने के लिए झरनों का जल देता है, गायों के लिए सुंदर हरी हरी घास और विश्राम करने के लिए कंदराएं और खाने के लिए कंदमूल फल देता है। वास्तव में यह धन्य धन्य है।

गा गोपकैरनुवनं(न्) नयतोरुदार-

वेणुस्वनैः(ख्) कलपदैस्तनुभृत्सु सख्यः ।

अस्पन्दनं(ङ्) गतिमतां(म्) पुलकस्तरूणां(न्),

निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् ॥ 19॥

अरी सखी!श्यामल गौर किशोरों की तो बात ही निराली है। जब यह गाय के पैर पर बांधने वाली रस्सी को कंधों पर लपेटकर गायों को एक वन से दूसरे वन में हांककर ले जाते हैं तब मधुर बंसी की तान छेड़ देते हैं। उस समय मनुष्यों की तो बात ही क्या, चलने वाले चेतन पशु पक्षी तथा जड़ नदी आदि स्थिर हो जाते हैं तथा वृक्षों को भी रोमांच होने लगता है। सखी! इस जादू भरी बंशी का और क्या चमत्कार सुनाऊँ?

एवं(व्)विधा भगवतो, या वृन्दावनचारिणः ।

वर्णयन्त्यो मिथो गोप्यः(ख्), क्रीडास्तन्मयतां(म्) ययुः ॥ 20॥

हे परीक्षित! वृंदावन बिहारी श्री कृष्ण की ऐसी एक नहीं अनेक लीलाएं हैं। गोपिया प्रतिदिन आपस में उनका वर्णन करती हैं और तन्मय हो जाती हैं |भगवान की लीलाएं उनके हृदय में स्फुरित होने लगती हैं।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां(म्) संहितायां(न्)

दशमस्कन्धे पूर्वार्धे वेणुगीतं(न्) नामैकविंशोऽध्यायः ॥